Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/234
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAY-JUNE 2024, Vol- 13/83

धार्मिक पर्यटन एवं आधुनिक जीवन–शैली

डॉ. राजीव कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, एस. एस. कॉलेज, शाहजहॉपुर, उत्तर प्रदेश, भारत, पिन 242226

ईमेल–rky2311897@gmail.com

Paper Received On: 20 May 2024

Peer Reviewed On: 24 June 2024

Published On: 01 July 2024

Abstract

अतिथि देवो भव अर्थात अतिथि भगवान के समान होता है। हमारे यहॉ आगन्तुक, मेहमान या पर्यटक को भगवान का दर्जा दिया गया है और ऐसा माना जाता है कि मेहमान के आने से समृद्धि बढ़ती है। इससे हमारे यहॉ मेहमान नवाजी और पर्यटन के महत्व का भी पता चलता है। अतिथि देवो भव की संकल्पना में पर्यटन का संदेश समाहित है। भारत प्राचीन काल से ही अध्यात्म प्रधान देश रहा है। हिन्दू धर्म में तीर्थ यात्राओं का विशेश महत्व रहा है। तीर्थ यात्राएँ हिन्दुओं की जीवन–शैली का अभिन्न हिस्सा रही हैं। हिन्दू धर्म में जीवन के अंतिम उद्दे य मोक्ष की प्राप्ति के लिए तीर्थों की यात्रा को अनिवार्य माना गया है। धार्मिक पर्यटन और भारतीय जीवन–शैली पारस्परिक रूप से एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। परंपरागत भारतीय जीवन–शैली अध्यात्म और त्याग की ही जीवन–शैली रही है। धार्मिक पर्यटन अध्यात्म, सांस्कृतिक विरासत और परंपरागत भारतीय जीवन–शैली को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। भारतीय धर्मों ने यहॉ की जीवन–शैली को गहराई से प्रभावित किया है। धार्मिक परंपराओं का सीधा प्रभाव जीवन–शैली पर पड़ता है। धार्मिक पर्यटन में व्यक्ति अध्यात्म को केन्द्र में रखकर पर्यटन के लिए आकर्शित होता है। भारत एक ऐसा देश है जो अपनी आध्यात्मिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। भारतीय जीवन–शैली में समाहित त्याग और परोपकार हिन्दू जीवन–शैली के अभिन्न अंग रहे हैं। त्याग, परोपकार, दान, सेवा आदि की भावना को धर्म और तीर्थाटन से ही बल मिलता है। हिन्दू धर्म में तीर्थ यात्राओं को जीवन–शैली का अभिन्न हिस्सा माना गया है। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में तीर्थ यात्रा अवश्य करनी चाहिए। धार्मिक यात्रा से व्यक्ति को शॉतिं और आनंद की प्राप्ति होती है।

बीज शब्द : *धार्मिक पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन, अध्यात्म, तीर्थाटन, पर्यटक, जीवन–शैली।*

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उद्देश्य

इस शोध–पत्र का उद्दे य धार्मिक पर्यटन एवं आधुनिक जीवन–शैली के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों का अध्ययन करना है। यह ज्ञात करना कि धार्मिक पर्यटन एवं आधुनिक जीवन–शैली आपस में एक दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं।

समस्या की पृश्ठभूमि

वर्तमान समय में धार्मिक पर्यटन का दायरा बढ़ रहा है जोकि हमारी जीवन जीने की विधि को प्रभावित कर रहा है। धार्मिक यात्राएं सौहार्दपूर्ण व सकारात्मक संदेश देने वाली होती हैं। पर्यटन जीवन–शैली को प्रभावित करने के साथ–साथ रोजगार का साधन भी बन रहा है। ऐसे में यह प्रासंगिक हो जाता है कि धार्मिक पर्यटन व बदलती जीवन–शैली के परस्पर सम्बन्धों को समझा जाए। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत की धार्मिक पर्यटन व्यवस्था व यहॉ की जीवन पद्धत्ति के आपसी सम्बन्धों को समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

वर्तमाान समय में तेजी से उभरते हुए उद्योगों में पर्यटन उद्योग अपनी अलग पहचान बना रहा है। जीवन की भाग दौड़ और तनाव भरे जीवन से कुछ समय के लिए घर से दूर होकर भाांति और आनंद की तलाश में अपने अनुकूल समय बिताना ही पर्यटन का उद्देश्य है। हिन्दू धर्म में प्रत्येक मनुश्य की यह अभिलाशा होती है कि वह अपने जीवन काल में विभिन्न प्रकार के तीर्थ स्थलों की यात्रा करे। धार्मिक भावना से अविभूत भक्त गण तीर्थ यात्रा करके मोक्ष और मुक्ति का मार्ग तलाशते हैं। प्राचीन काल में पर्यटन का मुख्य उद्देश्य तीर्थ यात्रा अर्थात धार्मिक ही था लेकिन आधुनिक समय में पर्यटन धार्मिक के साथ–साथ आर्थिक गतिविधि के रूप में रोजगार सृजन का जरिया भी बन रहा है। धार्मिक स्थल या तीर्थ क्षेत्र आध्यात्मिक केन्द्र के साथ–साथ अन्य कई प्रकार की गतिविधियों जैसे–शिक्षा, बाजार, होटल, परिवहन व्यवस्था इत्यादि के रूप में भी विकसित हो रहे हैं। पर्यटन एक व्यापक अवधारणा है जो मुख्य रूप से चार भागों में विभाजित है धार्मिक पर्यटन, सॉस्कृतिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन तथा प्राकृतिक पर्यटन। पर्यटन देश के विभिन्न भागों और वहॉ रहने वाले लोगों के जीवन को कई प्रकार से प्रभावित करता है। धार्मिक पर्यटन को हमारे देश में प्राचीन समय से ही महत्व दिया जाता रहा है। आधुनिक भौतिकवादी मूल्यों के दौर में नैतिक मूल्यों में आयी गिरावट को कम करने, नयी पीढ़ी को अनुशासित व सृजनात्मक जीवन जीने का संदेश

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

देने तथा युवाओं को भारतीय संस्कृति और धर्म की तरफ आकर्शित करने के लिए तीर्थ यात्रा और मंदिर परंपरा का जीवित रहना आव यक है। काचरू (2019)[1] अपने अध्ययन मे बताते हैं कि मनुश्य जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी सर्वोच्च भाक्ति पर भरोसा करता है ऐसा विचार सभी धर्मों में पाया जाता है। मनुश्य का विश्वास है कि कोई न कोई ऐसी भाक्ति जरूर है, जो इस सृश्टि का संचालन करती है। यही आस्था प्राचीन काल से एक स्थल से दूसरे स्थलों अथवा देशों में जाने का विलक्षण माध्यम रही है। प्राचीन काल से ही तीर्थ यात्राएं करने की परम्परा देखने में आती है जिसे हम पर्यटन को सबसे पुराना रूप कह सकते हैं।

धार्मिक पर्यटन

धार्मिक पर्यटन सदियों पुरानी एक ऐसी अवधारणा है जिसमें लोग अध्यात्म या धार्मिक उद्दे य से पवित्र तीर्थ स्थलों की यात्रा करते हैं। पवित्र धार्मिक स्थलों की यात्रा को ही तीर्थ यात्रा कहा जाता है। तीर्थ यात्रा में आस्था का भाव समाहित होता है जबकि पर्यटन को अवकाश या मनोरंजन के लिए यात्रा भी कहा जा सकता है। वर्तमान में पर्यटन में तीर्थ यात्रा की एक महत्वपूर्ण भागेदारी है। विदे ाों से भी पर्यटक बड़ी संख्या में भारतीय धार्मिक स्थलों की यात्रा करते हैं। लोग प्राचीन काल से ही धार्मिक स्थलों की यात्रा करते रहे है। हिन्दू जीवन पद्धत्ति में तीर्थ यात्रा को धार्मिक कर्त्तव्य के रूप में स्वीकार किया गया है। आधुनिक समय में धार्मिक पर्यटन के बाजारीकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है जिसके कारण पर्यटन स्थलों पर कई प्रकार की सुविधाएं मिलना सम्भव हो पाया है। बाजारीकरण के कारण पर्यटन रोजगार का जरिया भी बन रहा है। सिंह, त्रिपाठी व इफ्तिखार (2023)[2] के अनुसार पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुरसत के समय का आनंद उठाने के लिए की जाती है जबकि धार्मिक पर्यटन, पर्यटन उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो आमतौर पर विशेश धर्म के अनुयायियों से संबंधित होता है। सिंह (2021)[3] के अनंसार धार्मिक पर्यटन, पर्यटन का अग्रणी रूप है जो लगभग मानवता के साथ भाुरू हुआ है। प्राचीन काल से धार्मिक स्थल न केवल सांस्कृतिक परिदृ य का हिस्सा थे बल्कि वे स्थानीय विपणन और मेजवान स्थलों की अर्थव्यवस्था के प्रमुख भागों में भी एक सांस्कृतिक कारक बन गये थे। पाण्डेय व मालवीय (2023)[4] के अनुसार धार्मिक पर्यटन और इसकी अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण पहल करने की जरूरत है, पुराने मंदिरों का जीर्णोद्धार, सभी प्रकार के किफायती

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

और लक्जरी होटलों का निर्माण, बुनियादी ढॉचे और नागरिक सुविधाओं का विस्तार, इन धार्मिक और तीर्थ स्थानों में पर्यटक सूचना केन्द्रों की स्थापना और इन स्थानों तक पहॅुचने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में उनकी कनेक्टिविटी जैसी पहल से भारत में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, इससे राश्ट्रीय अर्थव्यवस्था में धार्मिक पर्यटन का योगदान बढ़ेगा।

परंपरागत हिन्दू धर्म में जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष माना गया है। मोक्ष प्राप्ति के लिए कई प्रकार के मार्ग सुझाए गए हैं जिनमे से एक मार्ग पवित्र तीर्थ स्थलों की यात्रा व पूजा पाठ को बताया गया है। जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष होने के नाते हिन्दू धर्म में धार्मिक पर्यटन को अत्यधिक महत्व दिया गया है। इसी कारण धार्मिक पर्यटन हिन्दुओं की जीवन–शैली का अतीत से ही अभिन्न हिस्सा रहा है। हमारे यहॉ पर्यटन का अर्थ ही धार्मिक पर्यटन से लिया जाता है। धार्मिक पर्यटन का सामान्य अर्थ विभिन्न धार्मिक स्थलों की यात्रा करने से है। हिन्दू धर्म में तीर्थ यात्रा को पुण्य अर्जित करने का जरिया भी माना गया है। यदि हम हिन्दू धर्म की बात करें तो इसमें विविध प्रकार की धार्मिक यात्राओं का वर्णन मिलता है जैसे–चार धाम यात्रा, द्वादश ज्योर्तिलिंग यात्रा, भाक्ति पीठों की यात्रा, पवित्र नदियों का स्नान, कुम्भ, महाकुम्भ, मथुरा, हरिद्वार, वृंदावन, अयोध्या, प्रयाग, चित्रकूट, द्वारिका, रामे वरम व अन्य पूजनीय स्थलों की यात्रा। धार्मिक पर्यटन या तीर्थ यात्रा से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। धार्मिक यात्राओं से मेल–मिलाप का दायरा बढ़ता है, नए लोग व नए स्थानों की जानकारी मिलती है। इससे सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी बढ़ता है। काचरू (2019)[5] अपने अध्ययन मे बताते हैं कि आध्यात्मिक अथवा तीर्थ पर्यटन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, तीर्थ यात्रा को पर्यटन से अलग करके आध्यात्मिक पर्यटन की अवधारणा को स्वीकार करना मुश्किल काम है, क्योंकि धार्मिक व्यक्तियों का समूह ही तीर्थ एवं अन्य धार्मिक स्थलों की यात्रा करता है। आध्यात्मिकता के आधार पर हम देश की संस्कृति एवं भाईचारे को एक मंच पर लाने में मुख्य भूमिका अदा कर सकते हैं क्योंकि सभी धर्मों का उद्दे य एक ही होता है–आपसी भाईचारा। यह भाईचारा केवल तीर्थ एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों को विकसित करके ही प्राप्त किया जा सकता है। कुमार व भारद्वाज (2017)[6] अपने शोध पत्र में बताते हैं कि पर्यटन के क्षेत्र में आध्यात्मिक पर्यटन ने एक नया आयाम जोड़ा है, जिसे ''स्पिरिचुअल टूरिज्म'' भी कहा जाता है। आध्यात्मिक पर्यटन में भाारीरिक स्वास्थ्य के सम्वर्धन और मानसिक मनोरंजन के साथ–साथ ज्ञान सम्पादन जैसे अनेकों लाभ जुड़े हुए हैं।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आध्यात्मिक पर्यटन एक बहुउद्देशीय सार्वभौमिक अवधारणा है। बहुउद्देशीय इस अर्थ में कि धार्मिक स्थल अध्यात्म के अलावा अन्य कई प्रकार के सामाजिक सरोकारों से भी जुड़े हुए हैं। बहुत से मंदिर या आध्यात्मिक स्थल स्वास्थ्य सेवा के लिए चिकित्सालयों का संचालन करते हैं, शिक्षा के लिए शैक्षणिक संस्थानों की व्यवस्था है, योग संस्थान चल रहे हैं, बेसहारा लोगों के लिए आश्रय स्थल बनाए गए है, मनोरंजन के लिए मनोरम प्राकृतिक दृश्य विकसित किए गए हैं, गायों के लिए गौशालाएं बनायी गयी हैं तथा पर्यावरण संरक्षण में भी मंदिरों की सकारात्मक भूमिका पायी जाती है। इसके साथ ही अन्य कई प्रकार के सामाजिक सेवा से संबंधित दायित्वों का निर्वहन आध्यात्मिक केन्द्रों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार धार्मिक स्थल अध्यात्म के साथ–साथ सामाजिक दायित्वों का भी निर्वहन कर रहे हैं। जब आध्यात्मिक स्थलों में चिकित्सालय, भौक्षणिक संस्थान, अनाथालय, योग संस्थान व गौ ाालाएं इत्यादि व्यवस्थाएं होंगीं तब इनके संचालन के लिए रोजगार के साधनों का भी सृजन होगा। अर्थात धार्मिक केन्द्र सामाजिक सेवाओं के साथ–साथ रोजगार भी प्रदान कर रहे हैं। भारत आध्यात्मिक पर्यटन स्थलों से समृद्ध देश है जिसके प्रत्येक क्षेत्र में उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पि चम तक सांकृतिक विरासत स्थल मौजूद हैं। क मीर से कन्याकुमारी और द्वारका से गंगासागर तक आध्यात्मिक पर्यटन स्थल विद्यमान हैं। कुमार व भारद्वाज (2017)[7] अपने अध्ययन में बताते हैं कि आध्यात्मिक पर्यटन किसी विशेश धर्म से संम्बंधित न होकर समस्त धर्मो का समन्वय है यह एक ऐसा पर्यटन है जहॉ व्यक्ति आत्म ोधन व आत्म परिश्कार के लिए यात्रा करता है।

विश्व में सबसे बड़ा धार्मिक पर्यटन या मेला कुम्भ का माना जाता है। जहॉ दुनियॉ भर के श्रद्धालुओं का जमावड़ा होता है। कुम्भ मेला में कई देशों की संस्कृतियों की झलक एक साथ दिखायी पड़ती है जिससे हमे देश दुनिया की तहजीब को देखने व समझने का अवसर मिलता है। इस प्रकार के मेले या तीर्थ यात्राओं से गौरव ााली अतीत की जानकारी भी मिलती है। साम्प्रदायिक सद्भाव व आपसी भाईचारा बढ़ता है। धार्मिक पर्यटन अध्यात्म, समाज, समुदाय, रीति रिवाज व संस्कृति से जोड़ने के साथ–साथ ज्ञान प्राप्त करने के नए अवसर प्रदान करता है। आधुनिक समय में पर्यटन तेजी से उभरते हुए उद्योग के रूप में अपनी एक अलग पहचान बना चुका है। इस उद्योग से लोगों को एक बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर मिल रहे हैं फिर चाहे वह होटल, परिवहन, रेस्तरॉ, खाने–पीने की छोटी–छोटी

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दुकाने, रोड किनारे अपनी जीविका की तलाश में बैठने वाले छोटे–छोटे दुकानदार या आगन्तुकों को देखकर दौड़–भाग करके फूल, प्रसाद व खाने–पीने की सामग्री बेचने बाले छोटे बच्चे ही क्यों न हों पर्यटन सभी के लिए रोजगार का जरिया बन रहा है। आसेरी (2018)[8] अपने अध्ययन में बतातीं हैं कि पर्यटन उद्योग न केवल राश्ट्रीय आय में वृद्धि का माध्यम है वरन् इसके द्वारा बड़ी मात्रा में रोजगार सृजन किया जाना भी संभव है। भारत के ऐतिहासिक महत्व तथा यहॉ के विभिन्न शहरों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते हुए यहॉ पर पर्यटन उद्योग के विकास की असीम संभावनाएं दिखायी पड़ती हैं तथा इस क्षेत्र में रोजगार सृजन के भी पर्याप्त अवसर मौजूद हैं।

पर्यटन स्थलों में सुखःद अनुभूति के साथ–साथ यदा–कदा दुखःद या चिंताजनक घटनाएं भी सामने आने लगीं हैं जिसका कारण बढ़ता मानवीय हस्तक्षेप व प्रकृति की अनदेखी भी हो सकता है। देव भूमि उत्तराखण्ड का केदारनाथ धाम हादसा बहुत ही दुःखद व चिंताजनक घटना थी जिसने प्रकृति के साथ मानवीय सम्बन्धों को पुनः परिभाशित करने की बहस छेड़ दी है। प्रकृति के साथ मित्रवत व्यवहार ही वर्तमान व आगामी पीढ़ियों के लिए सुखद हो सकता है। लेकिन पर्यटन के नाम पर पर्वतीय क्षेत्रों में तीर्थाटन व व्यावसायिक गतिविधियॉ अव्यवस्थित रूप से बढ़ रही हैं जोकि चिंता का विशय है। जैसे–जैसे यात्रा की सुविधाओं का विकास हो रहा है उसी क्रम में श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ रही है। वि ोशकर उत्तराखण्ड की चार धाम यात्रा में उपलब्ध संसाधनों से कहीं ज्यादा तीर्थ यात्री पहुॅच रहे हैं जिसके कारण सड़कों पर जाम की समस्या बढ़ती जा रही है। पहाड़ों पर सड़को का विकास तो हुआ है लेकिन चिकित्सा सुविधाएं पर्याप्त नहीं हैं। चिकित्सा सुविधाओं की ओर सरकार को ध्यान देना चाहिए और यात्रियों को भी ऐसी सुविधाओं के प्रति सचेत रहते हुए आचरण करना चाहिए। हिन्दुस्तान (2024)[9] समाचार पत्र के अनुसार उत्तराखण्ड के पहाड़ों पर यात्रियों की क्षमता से ज्यादा भीड़ चिंता का विशय है। चार धाम यात्रियों की चिंता जरूरी है। धार्मिकता के साथ पर्यटन और पर्यटन के साथ व्यावसायिकता जब जुड़ जाती है, तब दुखःद खबरें सामने आने लगतीं हैं। कुशवाहा (2024)[10] बताते हैं कि धार्मिक पर्यटन स्थलों और पहाड़ों पर इतनी ज्यादा भीड़ होने की सबसे बड़ी वजह है, बच्चों और अभिभावकों पर स्कूलों का दबाव। ज्यादातर लोग गर्मियों की छुट्टियों को छोड़कर साल भर कहीं घूमने नहीं जाते हैं। इसलिए पहाड़ों पर भीड़ की बड़ी वजह गर्मियों की छुट्टियॉ ही हैं।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आधुनिक जीवन–शैली

जब हम भारतीय जीवन–शैली की बात करते हैं तब इससे हमारा आशय परंपरागत भारतीय जीवन–शैली से होता है। परंपरागत भारतीय जीवन–शैली में धर्म, अध्यात्म, प्रकृति व पर्यावरण का बेहतरीन सामन्जस्य देखने को मिलता है जबकि आधुनिक जीवन–शैली पर बाजार और तकनीकी का प्रभाव बहुत तेजी से बढ़ रहा है। दोनों ही प्रकार की जीवन–शैली अलग–अलग समय व परिवेश का प्रतिनिधित्व करती है। जहॉ परंपरागत भारतीय जीवन–शैली मुख्यतः ग्रामीण परिवेश व ऋशि परंपरा को इंगित करती है वहीं आधुनिक जीवन–शैली नूतन तकनीक, नवीन प्रौद्योगिकी और सुविधाजनक जीवन के साथ–साथ तनावपूर्ण जीवन जैसी नयी समस्याए भीं लेकर आयी है। जीवन–शैली का अर्थ है जीवन को व्यवस्थित तरीके से जीने की कला या जीवन जीने का व्यवस्थित तौर तरीका। जीवन–शैली या संस्कृति से ही किसी भी देश की पहचान बनती है या इस प्रकार भी कह सकते हैं कि संस्कृति किसी भी देश की आत्मा होती है। भारतीय संस्कृति वि व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। जीवन–शैली अपने समय के परिवेश को परिलक्षित करती है। भार्मा और राठौर (2022)[11] अपने अध्ययन में बताते हैं कि जीवन–शैली जीने का एक तरीका है जो न केवल उस व्यक्ति को प्रभावित करती है जो इसे अपनाता है अपितु समाज को भी प्रभावित करती है।

जहॉ प्राचीन जीवन–शैली प्रकृति व पर्यावरण के प्रति मित्रवत थी वहीं आधुनिक जीवन– ैली प्रकृति व पर्यावरण के लिए सकारात्मक भूमिका का निर्वहन नहीं कर पा रही है। वर्तमान समय में जीवन–शैली जनित समस्याएं बढ़ रही हैं। स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरुकता के बावजूद अस्वास्थ्यकर दिनचर्या हमारी आदत का हिस्सा बनती जा रही है। प्रौद्योगिकी व तकनीकी पर बढ़ती मानव निर्भरता जीवन में सक्रियता को कम कर रही है। कम होती भाारीरिक सक्रियता शिथिलता व मोटापे को बढ़ा रही है। तीर्थ यात्रा या पर्यटन जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। धार्मिक पर्यटन में व्यक्ति आस्था व सकारात्मक ऊर्जा के साथ–साथ भाारीरिक रूप से भी सक्रिय रहता है जो कि स्वास्थ्य को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। सकारात्मक जीवन–शैली व्यक्ति के अंदर प्रसन्नता, आनंद व संतोश के भाव का संचार करती है जबकि नकारात्मक जीवन–शैली व्यक्ति में दुःख, बीमारियां तथा तनाव को बढ़ा सकती है। काचरू (2019)[12] अपने अध्ययन में बताते हैं कि आज के आधुनिक युग में मानव आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के कारण अवसाद व

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मानसिक रोगों से घिर गया है। भाांति एवं सुकून के कुछ क्षणों के लिए वह ऐसे तीर्थ स्थलों और उसके आस पास के अन्य स्थानों पर जाकर पुनः ऊर्जा की अनुभूति करना चाहता है।

आधुनिक जीवन–शैली में बदलाव के साथ–साथ पर्यटन में भी प्रतिस्पर्द्धा बढ़ रही है। आज के समय में पर्यटक सुविधाओं की ओर आकर्शित हो रहे हैं। अब त्याग के स्थान पर आरामदायक जीवन की चाह बढ़ रही है। आरामदायक जीवन की चाह में होटल, परिवहन, रेस्तरॉ, मनोरंजन के साधन तथा खान–पान की विविधता को बढावा मिल रहा है। अब तीर्थ स्थल अधिक सुविधाओं से युक्त, ज्यादा आकर्शक तथा अधिक सुरक्षित हो गए हैं। वर्तमान में तीर्थ स्थलों में अध्यात्म के साथ–साथ योग जैसी सुविधाएं भी मिल रही है। पर्वतीय क्षेत्रों में योग ि ाविरों का आयोजन व्यावसायिक गतिविधि का रूप ले रहा है। अर्थात योग ि ाविरों का आयोजन भी कमाई का जरिया बन रहा है जिसमें प्रतिभाग के लिए पहले से ही ऑनलाइन आवेदन पत्र के माध्यम से आपको अपना स्थान सुरक्षित करवाना पड़ता है। वर्तमान में योग की मार्केटिंग सभी समस्याओं के निदान के रूप में की जा रही है। लेकिन आज की व्यस्त दिनचर्या और भाग दौड़ भरे जीवन में समस्याएं भी कम नहीं हैं। साव (2019)[13] अपने अध्ययन में बताते हैं कि भारतीय जीवन–शैली जिसमें भोग और त्याग, धर्म और अर्थ, प्रेय और श्रेय, अभ्युदय और निःश्रेयस, भौतिकता और आध्यात्मिकता का संतुलित समन्वय ही जीवन का आदर्श माना जाता है, को छोड़कर व्यक्ति आधुनिक जीवन–शैली की चकाचौंध में अविवेक का अवलंवन लेकर नरकीटक एवं नरपशु का अमानवीय जीवन जी रहा है।

विकास और उन्नति की चाह में मानव जीवन का मशीनीकरण हो रहा हैं। आधुनिक जीवन की प्रौद्योगिकी पर निर्भरता वर्तमान समय की मांग है। आज तकनीक के अभाव में मानव जीवन की कल्पना करना असहज सा प्रतीत होता है। हमारी वर्तमान जीवन–शैली यन्त्रवत सी हो गयी है। तकनीक पर बढ़ती निर्भरता, प्रकृति व अध्यात्म से निकटता को कम कर रही है। भौतिकवादी जीवन में वृद्धि गुणवत्तापूर्ण जीवन–शैली को प्रभावित कर रही है। लोग तनाव व मानसिक विकारों से बचने के लिए योग व अध्यात्म की भारण में आ रहे हैं। प्राचीनकाल से ही योग व अध्यात्म हमारी जीवन–शैली का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। वर्तमान समय में योग की लोकप्रियता बढ़ रही है और यह लोगों की दिनचर्या का हिस्सा बन रहा है। साव (2019)[14] भारतीय जीवन–शैली में योग की उपादेयता पर बल देते हुए बताते हैं कि योग साधना भारतीय चेतना का विज्ञान है जो हमारे जीवन के आंतरिक एवं वाह्य वातावरण

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के साथ सामन्जस्य स्थापित करता है। मश्तिश्क की कार्य क्षमता को बढ़ाता है, शरीर व मन को विश्राम देता है तथा जीवन को आरोग्यता से उच्चतम चेतना की ओर अग्रसर करता है। इस प्रकार योगिक जीवन हमें शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से सुखी व आनंददायक जीवन प्रदान करता है।

निश्कर्श

धार्मिक पर्यटन अर्थात भाांति और अध्यात्म की तलाश में घर से निकलकर तीर्थ यात्रा पर जाना जिससे स्वास्थ्य लाभ के साथ–साथ स्वभाव में सकारात्मक ऊर्जा का संचार भी होता है। अध्यात्म का अर्थ होता है अपने आपको जानना। हमारे देश में मंदिर कला, शिक्षा, आध्यात्मिकता और संस्कृति के केंद्र रहे हैं। धर्म और जीवन पद्धत्ति आपस में एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। प्रचीन काल में हमारे जीवन जीने के तौर तरीकों का निर्धारण धार्मिक केन्द्रों और ऋशि परम्परा द्वारा ही होता था। भारतीय जन मानस में तीर्थ यात्रा को मोक्ष के अनेक मार्गो मे से एक मार्ग माना गया है। तीर्थ यात्रा या धार्मिक पर्यटन को भारतीय जीवन–शैली में अतीत से ही महत्वपूर्ण धार्मिक कर्त्तव्य के रूप में पहचाना गया है। प्राचीन काल में तीर्थाटन को भारतीय जीवन–शैली का हिस्सा माना जाता था। धार्मिक पर्यटन जीवन में त्याग, सहायता, सेवा व परोपकार का संदेश देने वाली सौहार्दपूर्ण पवित्र तीर्थ यात्रा है। तीर्थ यात्रा सामुदायिक सामन्जस्य व मानवीय एकता को समृद्ध करती है। धार्मिक पर्यटन और जीवन–शैली का अच्छा सामन्जस्य आध्यात्मिक सुख और भाांति प्रदान करता है। इस प्रकार स्पश्ट है कि धार्मिक पर्यटन और हमारी जीवन जीने की व्यवस्था आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

संदर्भ–

काचरू, अ वनी (2019) आध्यात्मिक पर्यटन : एक अवलोकन, अतुल्य भारत पत्रिका (ऑनलाइन), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, अक्तूबर–दिसंबर, पृ. 07–12.

सिंह, अभय प्रताप,. त्रिपाठी, अर्चना व इफ्तिखार, निशी (2023) उत्तर प्रदे ा में पर्यटन : धार्मिक सर्किटों का विश्लेशणात्मक अध्ययन, इंटरने ानल जर्नल ऑफ क्रियेटिव रिसर्च थॉटस (ऑनलाइन), वॉल्यूम–11, अंक–11, नवंबर, पृ. 362–366.

सिंह, सुरभि (2021) भारत में धार्मिक पर्यटन–अतीत, वर्तमान और भविश्य, इंटरनेशनल जर्नल आफ हिन्दी रिसर्च (ऑनलाइन), पृ. 2224–2432.

पाण्डेय, श्रीकान्त व मानवीय, अन्जनी कुमार (2023) उत्तर प्रदेश के धार्मिक पर्यटन का आर्थिक अवलोकन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिपलिनरी रिसर्च (ऑनलाइन), जुलाई–अगस्त, पृ. 01–03.

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

काचरू, अश्वनी (2019) आध्यात्मिक पर्यटन : एक अवलोकन, अतुल्य भारत पत्रिका (ऑनलाइन), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, अक्तूबर–दिसंबर, पृ. 07–12.

कुमार, आशीश व भारद्वाज, अजय (2017) 21 वीं शताब्दी में आध्यात्मिक पर्यटन : मूल्यवान घटक और नवीन दृश्टिकोंण, देव संस्कृतिः मल्टीडिसिपलनरी इंटरनेशनल जर्नल (ऑनलाइन), अंक 9, पृ. 18–24कृ

कुमार, आ ीश व भारद्वाज, अजय (2017) 21 वीं भाताब्दी में आध्यात्मिक पर्यटन : मूल्यवान घटक और नवीन दृश्टिकोंण, देव संस्कृति : मल्टीडिसिपलिनरी इंटरनेशनल जर्नल (ऑनलाइन), अंक 9, पृ. 18–24

आसेरी, इन्दू (2018) पर्यटन उद्योग में रोजगार की संभावनाएं, जर्नल ऑफ इमरजिंग टेक्नोलॉजी एंड इन्नोवेटिव रिसर्च (ऑनलाइन), वॉल्यूम–5, अंक–7, जुलाई, पृ. 154–159.

हिन्दुस्तान (2024) यात्रियों की चिंता, हिन्दुस्तान समाचार पत्र, बरेली संस्करण, शनिवार, मई–25, पृ. 06.

कुशवाहा, अवतार (2024) अब पहाड़ स्मृतियों वाले नहीं रहे, हिन्दुस्तान समाचार पत्र, बरेली संस्करण, बुधवार, मई–29, पृ. 08.

शर्मा, राजीव कुमार व राठौर, निर्मला (2022) विद्यार्थियों की जीवन–शैली एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, जर्नल ऑफ माडर्न मनेजमेंट एंड इंटरप्रिन्योरशिप (ऑनलाइन), जुलाई–सितंबर, पृ. 133–136.

काचरू, अश्वनी (2019) आध्यात्मिक पर्यटन : एक अवलोकन, अतुल्य भारत पत्रिका (ऑनलाइन), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, अक्तूबर–दिसंबर, पृ. 07–12.

साव, अरुण कुमार (2019) आधुनिक जीवन–शैली के परिप्रेक्ष्य में योग की उपादेयता, दृश्टिकोंण जर्नल (ऑनलाइन), सितंबर–अक्तूबर, पृ. 80–84.

साव, अरुण कुमार (2019) आधुनिक जीवन–शैली के परिप्रेक्ष्य में योग की उपादेयता, दृश्टिकोंण जर्नल (ऑनलाइन), सितंबर–अक्तूबर, पृ. 80–84.

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies